पाठ 7 **नवम्बर 10-16**

जब झगड़े खड़े होते हैं

सब्त अपराह्न **नवम्बर 10**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें: प्रेरि० 6:1-6; प्रेरि० 10:1-23; मत्ती 5:17-20; प्रेरि० 11:3-24; प्रेरि० 15:1-22; आमोस 9:11-12.

याद वचन: *"और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है, अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (गला० 3:27-28)।*

किसी भी मसीही समुदाय का कठिनत्तम कार्य है एकता को कायम रखना, जब कलीसिया की पहचान और कार्य से संबंधित विभिन्न विचार खड़े होते हैं ये विभिन्नताएँ खौफनाक परिणामों की ओर ले जा सकती हैं।

आज के मसीही समुदाय नये नियम के समय से भिन्न नहीं हैं। प्रारंभिक मसीहियों ने कुछ संघर्षों का सामना किया जो पारस्परिक पक्षपात और पुराने नियम की कहानियों और अभ्यासों के रूपांतरण की गंभीर भिन्नताओं के कारण खड़े हुए। ये संघर्ष कलीसिया को इसके बाल्यावस्था में ही नष्ट कर सकते थे यदि विचारशील प्रेरितों और अगुवों ने पवित्र आत्मा और शास्त्रों द्वारा समाधान हेतु मार्ग दर्शन न मांगा होता।

कुछ सप्ताह पूर्व हमने अध्ययन किया था कि किस प्रकार प्रारंभिक कलीसिया ने कलीसियाई एकता का अनुभव किया। इस सप्ताह हम देखेंगे कि किस प्रकार प्रारंभिक कलीसिया ने आंतरिक संघर्षों का समाधान किया जिसने इसकी एकता को कमजोर किया और इसके बने रहने के लिये खतरा बना। ये संघर्ष क्या थे, इनका समाधान कैसे हुआ, और उन अनुभवों से आज हम क्या सीख सकते हैं?

रविवार **नवम्बर 11**

जातीय पक्षपात

पढ़ें प्रेरि० 6:1. किस मामले ने प्रारंभिक कलीसिया में विधवाओं को भोजन के बराबर और उचित बांटवारे के विषय में लोगों को शिकायत करने का मौका दिया?

_____

_____

* सब्त, नवम्बर 17 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

कुछ प्रारंभिक मसीहियों को अपने मध्य में यूनानी विरासत की विधवाओं के खिलाफ पक्षपात करते हुए पाया गया। इन्हें यहूदी विरासत की विधवाओं से कम भोजन मिलता था। इस पक्षपात ने विश्वासियों के प्रारंभिक समुदाय में दरार पैदा कर दी। वाकई में पक्षपात था या नहीं, पाठ हमें नहीं बतलाता है। यह इतना ही कहता है कि कुछ लोग मानते थे कि यह था। बिलकुल शुरुआत में इस संघर्ष ने कलीसिया की एकता को धमकाया। कितना आकर्षक कि जातीय विभाजन कलीसिया में इतना जल्द दिखने लगा।

पढ़ें प्रेरि० 6:2-6. इस गलतफ़हमी को कलीसिया के द्वारा समाधान हेतु कौन-से सामान्य कदम उठाये गये ?

_____

_____

प्रारंभिक कलीसिया की बढ़ोत्तरी तीव्र गति से हो रही थी, और यह बढ़ोत्तरी प्रेरितों के लिये बढ़ता हुआ भार था। इन सात जनों का चुनाव ने जो पारंपरिक रूप से 'डीकन' कहलाते थे, यरुशलेम की कलीसिया को तनाव मुक्त किया और कलीसिया की सेवकाई में अधिक लोगों को शामिल किया।

प्रेरितों ने यूनानी-भाषा बोलने वाले विश्वासियों की शिकायतों को ध्यान पूर्वक सुना और समाधान के लिये उनसे पूछा। प्रेरितों के सहायक होने के लिये सात जनों का चुनाव इस दल पर छोड़ा गया, और उन्होंने सात चेलों की सिफारिश की और ये सभी यूनानी-भाषा बोलने वाले थे। ये लोग "सुनाम और पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण थे" (प्रेरि० 6:3)। प्रेरितों की सेवकाई तब तक दोनों थी। परमेश्वर के वचन का प्रचार करना और विधवाओं को भोजन बांटना, जो बाद में दो दल में बांटा गया- प्रेरित परमेश्वर के वचन का प्रचार करते थे और डीकन भोजन बांटने की सेवकाई करते थे (प्रेरि० 6:4, प्रेरि० 6:1)।

इस तथ्य में आप कौन-सी विशेषता पाते हैं कि अगुवों ने समाधान हेतु बहुत से विश्वासियों को साथ बुलाया?

सोमवार **नवम्बर 12**

अन्य जातियों का हृदय परिवर्तन

यीशु मसीह के सुसंवाद के प्रति अन्यजातियों का हृदय परिवर्तन प्रेरितों की किताब में एक घटना है जो प्रारंभिक कलीसिया के जीवन में महानतम संघर्ष के लिये मंच तैयार करता है, जो इसके अस्तित्व और कार्य के लिये खतरा होता है।

पढ़ें प्रेरि० 10: 1-23. इस अवतरण में कौन-से तत्व संकेत करते हैं कि अन्यजातियों के लिये सुसंवाद प्राप्त करने हेतु रास्ता तैयार करने को पवित्र आत्मा बहुत से लोगों के हृदयों में काम कर रहा था?

पतरस के लिये दर्शन बहुत विचित्र रहा होगा। इसके कारण उसे सदमा लगा, क्योंकि एक विश्वस्त यहूदी होकर उसने अशुद्ध भोजन कभी नहीं लिया और व्यवस्था की भी मांग यह थी (देखें लै० व्य० 11, यहेज० 4: 14 एवं दानि० 1: 8)। यद्यपि इस दर्शन का सार भोजन नहीं था परन्तु यह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच दीवार थी जो सुसमाचार प्रचार में एक बाधक थी। ऐसी बाधाएँ प्राचीन काल में जैसी प्रचलित थीं, आज भी हैं।

प्रथम सदी में, मसीहियत मूल रूप से यहूदियों द्वारा गठित थी, जिन्होंने यीशु को पुराने नियम की भविष्यवाणियों के अनुसार मसीह के तौर पर स्वीकार था। यीशु में ये प्रारंभिक विश्वासी विश्वस्त यहूदी थे जो व्यवस्था का सिखाये अनुसार पालन करते थे।

उन्होंने यह नहीं माना कि यीशु मसीह के सुसमाचार ने पुराने नियम के विवरणों को मिटा दिया था। (देखें मत्ती 5: 17-20)।

पढ़ें प्रेरि० 10: 28,29,34,35. पतरस ने जोप्पा में प्राप्त दर्शन का क्या अर्थ समझा, इसके रूपांतरण में उसे किसने अगुवाई की ?

प्रेरितों की किताब में जो हो रहा है हम देखते हैं, वह यह कि पवित्र आत्मा ने अन्यजातियों के लिये मसीही समुदाय की सहभागिता में मिलाये जाने का मार्ग प्रशस्त किया। वे बिना खतना के यह कर सकते थे और यहूदी बन सकते थे। पतरस और उसके मित्रों में जो ख्याल आया वह यह कि यह निश्चय ही परमेश्वर की इच्छा थी कि कुर्नेलियुस और उसके परिवार में पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना ठीक वैसा ही था जैसा यीशु के चेलों ने पेंतिकोस्ट के दिन अनुभव किया (प्रेरि० 10: 44-47)। यदि पवित्र आत्मा यहूदियों के समान ही अन्यजातियों को भी दिया गया, तो यह प्रमाण था कि मसीहा के तौर पर यीशु में एक विश्वासी बनने की शर्त खतना नहीं थी। इस निष्कर्ष ने प्रारंभिक मसीहियों के बीच में एक बड़े धार्मिक संघर्ष के मंच को तैयार किया।

आत्मा अगुवाई कर रहा है

कुरनेलियुस के साथ कैसरिया में जो हो रहा था यह संदेश तुरंत यरुशलेम में मसीही समुदाय के अगुवों के पास पहुँच गया, और उन्होंने इसका विवरण पतरस से माँगा। पतरस ने जो किया उससे वे अपमानित महसूस कर रहे थे क्योंकि मूसा की व्यवस्था का उनके यहूदी समझ अनुसार, विश्वस्त यहूदियों को अन्यजातियों के साथ खाने-पीने की इजाजत नहीं थी (प्रेरि० 11:3)।

पढ़ें प्रेरि० 11:4-18. पवित्र आत्मा का कार्य और इस घटना में उसकी अगुवाई को वर्णन करने के लिये पतरस ने क्या कहा? जो हुआ उसकी पुनर्गणना के द्वारा वह किस मुख्य बिन्दु का संकेत कर रहा था ?

_____

_____

यद्यपि कुछ लोगों ने पतरस के कामों और इन अन्यजातियों को बपतिस्मा देने के उसके निर्णय की वैधता पर सवाल खड़े किये, पर्याप्त गवाहियों ने साबित किया कि पेंतिकोस्ट के दिन की तरह निश्चय ही पवित्र आत्मा ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। इस मामले में पवित्र आत्मा की अगुवाई और मार्ग दर्शन अभेद्य और स्वीकार किया हुआ दान है। "यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है" (जेरि० 11:18)।

पढ़ें प्रेरि० 11:19-24. प्रारंभिक कलीसिया के जीवन में बाद में क्या हुआ। ?

_____

_____

संभवत: यरुशलेम में कुछ लोगों ने सोचा कि जो कुरनेलियुस और उसके परिवार के साथ हुआ वह एक अपवाद रहा होगा और ऐसा अनुभव दुबारा नहीं होगा। परन्तु पवित्र आत्मा का यह इरादा नहीं था। जिस प्रकार यीशु के चेले, स्तीफनुस की मृत्यु के बाद शुरू हुए सताहट के कारण यरुशलेम और यहूदिया में तितर-बितर हो गये (प्रेरि० 8:1), और सामरिया, फोनिसिया, साईप्रस और अंतकिया को चले गये और अधिक से अधिक अन्यजातियों ने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वकार किया। यीशु ने यह पहले ही कह दिया था (प्रेरि० 1:8)। जितना अद्‌भुत अन्यजातियों का यह तांता (भीड़) लगा था, यदि हम स्वयं को इन प्रारंभिक यहूदी विश्वासियों के स्थान पर रखें यह देखना कठिन नहीं कि वे आश्वस्त नहीं थे कि कैसी प्रतिक्रिया करें।

हम स्वयं कलीसिया के संकीर्ण विचारों से और हमारे संवाद से कैसे स्थिर रह सकते हैं जो हमारी गवाही को बाधित कर सकते हैं ?

बुधवार **नवम्बर 14**

यरुशलेम की सभा

पढ़ें प्रेरि० 15: 1-2 एवं गला० 2: 11-14. दो मुद्दे कौन-से हैं जिसने प्रारंभिक कलीसिया में गंभीर विवाद को खड़ा किया ?

प्रारंभिक मसीहियों द्वारा सामना की गई कलीसियाई एकता के प्रति धमकी वास्तविक और कठिन थी। कुछ यहूदी मसीही सोचते थे कि उद्धार केवल उनके लिये संभव था जो परमेश्वर की वाचा के लोग थे, और यह जोर देता था कि खतना जरूरी है। और एक विश्वस्त जीवन शैली के भाग के तौर पर, ये यहूदी विश्वासी भी विश्वास करते थे कि उन्हें अन्यजातियों के संपर्क में आने से बचना चाहिए जो संभवत: उनके स्वयं के उद्धार को विफल कर सकता था।

यहूदियों की अन्यजातियों के साथ सहभागिता के विषय में बहुत सख्त परंपरा थी। ये परंपरा बहुत ही जल्द नये मसीही समुदाय के लिये बाधा बनी जब प्रेरितगण अन्यजातियों तक पहुँचने लगे जो यीशु के अनुयायी होना चाहते थे। चूँकि मसीहा परमेश्वर की वाचा के लोगों का उद्धारक है, जिस प्रकार पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी, क्या अन्यजातियों को सर्वप्रथम यहूदी नहीं बनना चाहिए और तब उसी वाचा नियमों को पालन करते, अगर वे बचना चाहते थे ?

पढ़ें प्रेरि० 15: 3-22. यरुशलेम की सभा के दौरान कौन-से मुद्दे पेश किये गये ?

मुद्दे पुराने नियम की कहानियों के रूपांतरण पर विवाद में जड़ित हैं जो अन्यजातियों के साथ संबंध और खतना के विषय में है। जैसा कि प्रेरितगण, पुरनिए और अंतकिया से प्रतिनिधि साथ बैठे, यह ऐसा लगता है चर्चा लम्बे समय तक बिना समाधान के चली।

लेकिन तब पतरस, बरनबास, और पौलुस ने बोलना शुरू किया। पतरस का भाषण दर्शन द्वारा दिये गये प्रकाशन को संकेत करता था जिसे परमेश्वर ने उसे दिया, तथा यह पवित्र आत्मा के दान को भी इंगित करता था, जिसने अन्यजातियों के प्रति काम के लिये मार्ग प्रशस्त किया। तब पौलुस और बरनबास ने अपनी कहानियों को साझा किया जिसे परमेश्वर ने उनके द्वारा

अन्यजातियों के लिये किया। परिणाम स्वरूप बहुत-सी आँखें सच्चाई की ओर खुलीं। पतरस ने कहा: "हाँ, हमारा यह निश्चय है कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएँगे; उसी रीति से हम भी पाएँगे" (प्रेरि० 15: 11)। सदियों से चली आ रही परंपरा सुसमाचार के प्रकाश में खुल रही थी।

क्या कभी वैसा भी समय आया कि गहरे विश्वास को आपने जैसा समझा था उस विषय में सोच को बदने की जरूरत पड़ी? उस अनुभव से आपने क्या सीखा जो संभवत: आप को मदद करता जब आप अपने विश्वास की अपनी समझ पर पुन: सवाल खड़ा करते?

बृहस्पतिवार **नवम्बर 15**

कठिन समाधान

अंतकिया की कलीसिया से यरुशलेम को प्रतिनिधि भेजने के लिये कुछ भरोसे के स्तर को देखना पड़ा ताकि विवाद का बेहत्तर समाधान हो सके। फिर भी घंटों बहस के बाद प्रेरितों और पुरनियों के बीच याकूब, यीशु का भाई जो सभा का अगुवा लगता है, ने निर्णय किया कि क्या किया जाये (प्रेरि० 15: 13-20)। स्पष्ट रूप से सभा ने निर्णय लिया कि अन्यजातियों को मसीही बनने के लिये खतना सहित सभी विधि व्यवस्थाओं को मान कर हृदय परिवर्तित यहूदी बनने की जरूरत नहीं है।

पढ़ें आमोस 9: 11-12 एवं यिर्म० 12: 14-16. इस्राएल के पड़ोसी राष्ट्रों के विषय में इन पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में क्या भविष्यवाणी की ?

_____

_____

जब याकूब आमोस का हवाला देता है, हम दूसरे पुराने नियम के भविष्यद्वक्तओं में राष्ट्रों के उद्धार का संकेत देखते हैं। इस्राएल की गवाही और अनुभव के द्वारा परमेश्वर का इरादा संपूर्ण संसार को बचाना था। वास्तव में परमेश्वर का अब्राहम को बुलाना उसके और उसके वंशजों के द्वारा सभी राष्ट्रों को आशिष के लिये शामिल करना था (उत्प० 12: 1-3)। पवित्र आत्मा की अगुवाई, अन्यजातियों के बीच में पतरस, बरनबास, एवं पौलुस की सेवकाई; और बहुत से अन्यजातियों का हृदय परिवर्तन प्रमाण थे जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता था। यरुशलेम में मसीही समुदाय के अगुवों को इन गवाहियों ने महसूस करने में मदद की कि बहुत सी पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ अब पूरी हो रही थीं। वास्तव में परमेश्वर ने इस्राएल में अन्यजातियों की उपस्थिति

को निर्देशित करने के लिये पहले ही व्यवस्थाएँ दे दी थी और साथ में पाबंदियाँ भी उन्हें बतला दी गई (लै० व्य० 17: 18)। याकूब ने भी अपने निर्णय में इन व्यवस्थाओं का जिक्र किया था (प्रेरि० 15: 29)। सबके लिये यह स्पष्ट हो चुका था कि परमेश्वर अन्यजातियों को अपने लोगों में शामिल होने और यीशु में उद्धार पाने के लिये आमंत्रित कर रहा था। पवित्र आत्मा की अगुवाई ने उन्हें शास्त्र की गहरी समझ प्रदान की और उनमें महत्त्वपूर्ण सत्य को प्रकट किया जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

प्रेरि०15: 30-35 अंतकिया में विश्वासियों के प्रत्युत्तर को बतलाता है जो यरुशलेम में निर्णय लिया गया था: "और वे पढ़कर उस उपदेश की बात से अति आनन्दित हुए" (प्रेरि० 15: 31)।

हम यहाँ पर प्रेरितों की किताब में एक सशक्त उदाहरण पाते हैं कि किस प्रकार प्रारंभिक कलीसिया ने परमेश्वर के वचन में समर्पण के द्वारा प्रेम, एकता और भरोसे की मानसिकता के साथ पवित्र आत्मा की अगुवाई में एकता की बड़ी समस्या को दूर कर दिया।

यह विवरण इस विषय में हमें क्या सिखलाता है कि दूसरों की सुनना और उसकी सत्यता पर विचारना हमारे लिये क्यों महत्त्वपूर्ण है, जौभी कि जो वे बोलते हैं वास्तव में हम सुनना तो नहीं चाहते हैं ?

शुक्रवार **नवम्बर 16**

अतिरिक्त अध्ययन: Ellen G. White, "A seeker for Truth," PP. 131-142; " Jew and Gentile," PP. 188-200, in The Acts of the Apostles.

इस मामले में निर्णय देने वाली सभा के सदस्य प्रेरित और शिक्षक थे जिन्होंने यहूदी एवं अन्यजाति मसीही कलीसियाओं को खड़ी करने में अहम भूमिका निभाई थी, इनमें भिन्न-भिन्न जगहों से चुने हुए प्रतिनिधि भी थे। यरुशलेम से पुरनिए और अंतकिया से प्रतिनिधि उपस्थित थे, और अति प्रभावशाली कलीसियाओं के प्रतिनिधि शामिल थे। सभा ईश्वरीय न्याय के अनुसार चली हुई, ईश्वरीय इच्छा द्वारा स्थापित कलीसिया की गरिमा मौजूद थी। उनके विचार-विमर्श के परिणाम स्वरूप अन्यजातियों पर पवित्र आत्मा उण्डेले जाने के द्वारा उन सभों ने देखा कि स्वयं परमेश्वर ने इस मुद्दे पर अपना जवाब दे दिया था; और उन्होंने महसूस किया कि उन्हें आत्मा की अगुवाई का पीछा करना है।

"मसीहियों का संपूर्ण निकाय मुद्दे पर वोट के लिये नहीं बुलाया गया। प्रेरितों और पुरनियों, प्रभावशाली और न्यायी लोगों ने निर्णय का ढांचा तैयार

किया, जो बाद में मसीही कलीसियाओं द्वारा सामान्यतय: स्वीकार किया गया। यद्यपि इस निर्णय से सब लोग प्रसन्न नहीं थे; महत्त्वाकांक्षी और आत्म-विश्वासी भाई भी थे जो इससे असहमत थे। वे अपनी जिम्मेदारी के कार्य को करते रहे। वे हमेशा कुड़कुड़ाते रहे और गलतियाँ निकालते रहे। सुसमाचार प्रचार हेतु परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त लोगों को नीचे गिराने की नई योजनाएँ बनाते रहे। प्रारंभ ही से कलीसिया ने ऐसी बाधाओं का सामना किया है और अंतिम समय तक यह रहेगी।"– Ellen G. White, The Acts of the Apostles, PP. 196-197.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:-

1. इस सप्ताह के वर्णन में विवाद के समाधान के लिये कौन-से कदम दिखाए गए हैं जो आपकी कलीसिया में यदि विवाद हो तो लागू किये जा सकते हैं ? एक समस्या धार्मिक थी, इन वर्णन से हम क्या सीख सकते हैं जो एकता के लिये सांस्कृतिक, राजनीतिक या जातिगत समस्याओं से कलीसिया को मदद कर सकते हैं ? हमने जो देखा है उससे कौन-से महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त ले सकते हैं ?
2. एलेन जी० ह्वाईट द्वारा उद्धृत उपरोक्त पंक्तियों को पुन: देखें। सकारात्मक परिणाम के बावजूद बहुत से लोग अभी भी असंतुष्ट थे। इस दुखद वास्तविकता से हम कौन-सा पाठ सीख सकते हैं ?

सारांश:- प्रारंभिक कलीसिया विभिन्न समस्याओं के आंतरिक टकराव से जूझ ही थी जिसका इस पर बुरा प्रभाव हो सकता था। हमने तरीका देखा कि कलीसिया पवित्र आत्मा की अगुवाई में और परमेश्वर के वचन में समर्पित होकर इन विवादों का हल कर सकती थी और फूट से बच सकती थी।